युग · चक्र

श्री 'अमर'

नवरत्न गोष्ठी का सातमा पुष्प

युग-चक्र

व्यंग्य-रचना

रचयिता

— श्री अमर —

मूल्य आठआना

प्रथम संस्करण
१९५२ ई०

मुद्रक
श्रीभूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस
दरभङ्गा

प्राथमिकी

काव्य मे नओ रस मानल गेल अछि। प्रतिरस मे अपूर्व छटा रहितहुँ हास्य में एक अनुपम शक्ति अछि। हास-मधुमासक आगमन उल्लास-किसलय-निचय सँ उजड़ल मानस-उपवनकें बरल-पुरल बना दैत अछि। हास्यक औदास्य-ध्वंसी वंशीक मधुर ध्वनि सुनितहिं अमन्दानन्द-सन्दोह क समुत्तुङ्ग-तरङ्ग सँ अन्तरङ्गनरीनृत्यमान भैजाइत अछि। हास्यक विवेचना एना अछि—

विकृताऽऽकार वाग्वेशच्चेष्टादेः कुहकाद् भवेत्
हासो हास्य-स्थायिभावः श्वेतः प्रमथदैवतः॥
विकृताऽऽकारवाक्चेष्टं यमालोक्य हसेज्जनः
तदत्राऽऽलम्बनं प्रोक्तं तच्चेष्टोद्दीपनम्मतम्॥

अनुभावोऽक्षिसङ्कोच–वचन स्मेरतादिकः
निद्राऽऽलस्याऽवहित्थाद्या अत्रस्युर्व्यभिचारिणः ॥

कौतुकी जनक विपरीत आकार, वचन, वेश, हस्तादिसञ्चालन एवं अङ्गविक्षेप आदि सँ हास-स्थायिभावक 'हास्य' होइछ। और ई सब वस्तु जतँ वर्णित रहैत अछि ओ गद्य-पद्य हास्य युक्त कहबैत अछि। हास्यक अधिपति वर्ण श्वेत अछि "धवलता वर्ण्यते हासकीर्त्योः" हास्यक अधिपति प्रमथ-गण (शिवक प्रिय पारिषद) छथि। जकरो विकृत-आकृति, मूर्खता वा उन्मत्तवत् असंबद्ध प्रलाप आदि, जकर दर्शन-श्रवण सँ हँसीक उद्रेक हो, ओ आलम्बन विभाव कहबैछ। दोसराक नकल करब, मुँह बनैब, हाथ चमकैब, जाहि सँ हास्य उद्दीपित हो, से उद्दीपन विभाव कहबैछ। विभावक साहाय्य सँ चित्त मे जे

भाव वा विकार उठैछ, ओकरा बाहर प्रकट कैनिहार अनुभाव थीक, जे सात्विक, कायिक, मानसिक एवं आहार्य्य एहि चारिभाग मे विभक्त अछि। स्थायि (यी) भाव मे जे जलतरङ्गक सम उठैछ और लीन भै जाइत अछि से सञ्चारी भाव थीक।

आचार्यगण हास्य क छओ भेद कैलन्हि अछि—

ज्येष्ठानां स्मितहसिते मध्यानां विहसितावसिते च
नीचानामपहसितन्तथाऽतिहसितञ्च षड्भेदाः ॥
ईषद्विकासि नयनं स्मितं स्यात् स्पन्दिताऽधरम् ।
किञ्चिल्लक्ष्यद्विजन्तत्र हसितङ्कथितं बुधैः ॥
मधुरस्वरं विहसितं सांशशिरःकम्पमवहसितम् ।
अपहसितं सास्राक्षंविक्षिप्ताङ्गञ्चभवत्यतिहसितम्

(साहित्यदर्पण ३य परिच्छेद)

तात्पर्य ई जे उत्तम पुरुष एवं उत्तम काव्यक लेल 'स्मित और हसित, मध्यमक हेतु विहसित अवहसित' एवं अधमक हेतु अपहसित तथा अतिहसित अछि।

विदेशीय विद्वद्गण क मतमे हास्य — (१) विश्रुत विद्वान् स्पेन्सर क मतें कोनो मनोविकार क प्राबल्य सँ हास्य उदित होइछ कारण हर्षातिरेक तथा क्रोधातिरेक मे हँसी लगैछ। (२) हाब्सक सिद्धान्तें दोसरक अपेक्षा निजमें श्रेष्ठताक बोध 'हास्य'क हेतु थीक। (३) प्रो० अलेकजेण्डर क कथने 'लघुता दर्शन' हास्यक बीज अछि। (४) काण्ट क विवेचने 'अधिक समय सँ उदित आपेक्षिक भाव जखन अस्तित्वहीन भै जाइत अछि तख-नुक मनोविकारजन्य क्रिया हास्य कहबैछ।

(५) शोपेहर क विचारें—अपन कल्पना आ' ओहि सँ सम्बद्ध वस्तु मे जखन कोनो प्रकार क असमानता होइछ तखन 'हास्य' उगैछ। (६) शेलीक सिद्धान्तें-मनुष्यक खेलैवाक प्रवृत्तिक (Intention of playfulness) हास्य (Humour) क तत्त्व अछि।

प्रस्तुत पुस्तकक कविता मे हास्यक परिष्कृति पूर्णरूपेण भेल प्रतिपद्य पढ़ितहिं चित्त संफुल्ल भैजाइत अछि। वस्तुतः ठेठ भाषा क ठाठ एवं भव्य भावक साँठ-माठ एहि संग्रह क स्वीय वैशिष्टय अछि। स्थालीपुलाक—न्याय सँ रस-परिपाक क उदाहरण—

'उठत नियन्त्रण भारत वर्षक
सुनलक बात जखन ई हर्षक

बनिजा आ' टुटपुंजिया नेता
सब कोठी अजबाड़ि रहल अछि'

एहिठाम बनिजा एवं टुटपुंजिआ नेता आलम्बन विभाव, नियन्त्रण रोधक सन्देश (रसोद्दीपक) उद्दीपन विभाव, कोठी अजबाड़ब रूप कार्य अनुभाव (कायिक), एवं चपलता, आवेग तथा हर्ष सञ्चार भाव अछि और एहि सब सँ पोषित स्थायी हास्य चर्व्यमाण होइत हास्य होइछ। बनिजा आ नेता दुहुक हेतु कोठी क प्रयोग श्लेष-वक्रोक्ति क चमत्कृति देखबैछ।

"वाच्यातिशायिनि व्यङ्ग्ये ध्वनिस्तत्काव्यमुत्तमम्" एहि मतें उत्ताम काव्य वैह थीक जाहि मे अभिधा क अपेक्षा व्यञ्जना सँ विशेष बोध हो, प्रस्तुत काव्य मे ध्वनि क सत्ता पूर्ण अछि।

'पद-लोलुप सब लोक भेल अछि
निस्सन जे छल फोंक भेल अछि
त्याग क मन्त्र सिखाबै अनका
आ' अपने घुसकान दैत अछि'

एहिमे 'घुसकान' शब्द मे केहन मार्मिक ध्वनि अछि से सरस मानस स्वयं बुझताह। लोकोक्तिक सुश्रृंखलित सन्निवेश जीवित साहित्यक एक प्रधान अङ्ग थीक और ओ पद्य-काव्य मे विलक्षण होइछ। एहिठाम लोकोक्ति सुन्दर-प्रयोग भेलअछि अलङ्कार क प्रयोग उत्तम अछि—

स्वभावोक्ति—

'नेढ़ा पर जा बैसल मच्छड़
लगने लस्सा कारै कच्छड़'

काव्य लिङ्ग (प्रथम वाक्यार्थ हेतुक)—

'पसरल छल कनिञे टा चिनगी
जे लेलक संसार क जिनगी
जड़ि मे पुनः धुँआइत अछि से
निश्चय पहु चैत जा कें फुनगी'

रूपक—

'घर क निकलुआ राजनीति-
सागर मे सब बुड़कान दैत अछि' ।

उपमा—

'पाथर सन जे अछि कठोर
तकरा रौदक धाही न घमावे'

विभावना—

'जरि गेल जौड़, जरि जाओ मुदा
एँठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि'

असङ्गति—

'भरिजन्म कमैला वड़द मुदा
बैसल हकमै छथि कुकुरे टा'

श्लेष—

'एकर विवेचन के करैत अछि
जे करैत अछि से करैत अछि'

अन्योक्ति—

'बकड़ि बेङ कें आइ फतिङ्गा
सहजहिँ लाभ करावै गङ्गा
'वन बिलाड़ कें आइ मञ्च पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि'

एवं यमक, अनुप्रास, समासोक्ति, सन्देह आदि क उपन्यास अछि। प्रसाद गुणक सम्पादन सुन्दर अछि, उक्त अछि—

चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवाऽनलः
स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च ॥

एहि मे 'वैदेही (वैदर्भी) 'रीति अछि । वस्तुतः ई लघुसंग्रह रहितहुं 'कलशे कल्पनोदधिः' अछि । रस गुण रीति अलङ्कार सँ युक्त ई लघुकाव्य हास्यक छलेँ कतिपय सामाजिक समस्या क संपरिष्कारक अछि । नूनमेव सरसमानस आमोदान्दोलित हेताह । नीरस हृदय क हेतु कहवे 'व्यर्थं' म कम्पते कम्प्रति वा कपेर्मुखम्"।

—आचार्य श्री गङ्गाधर मिश्र 'जीवू'
साहित्य मन्दिर–दरभंगा ।



युग – चक्र

कविता सूची ।

—: पहिल फेरा :—

जग कें युग परतारि रहल अछि
एमहर ओमहर के तकैत अछि
अपने हाथ सुतारि रहल अछि

उठत नियंत्रण भारत वर्षक
सुनलक बात जखन ई हर्षक
बनिआ आ' टुट-पुजिया नेता
सब कोठी अजवाड़ि रहल अछि

युग - चक्र

पकड़ि बेङ कें आइ फतिंगा
सहजहिं लाभ करावै गंगा
बन बिलाड़ि कें रंगमंच पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि

बहुतो गप्प करै नित मारक
बहुत बिचारै बात सम्हारक
बैसल विसुन बिलाड़ि बहुत जन
जग भरि आगि पसारि रहल अछि

बहुतो जन व्यापारी बनला
बहुतो खद्दड़-धारी बनला
पत्रकार बनि बहुतो कवि ओ'
लेखक कैं टिटकारि रहल अछि

मालिक हाथी अपन गमौलक
महथवार अधिकार जमौलक
बगड़ा झपटल बाजक ऊपर
पद सँ पकड़ि उतारि रहल अछि

—: दोसर फेरा :—

पहुँचलन्हि गूड़ केहुनी लग धरि
उनटा कै हाथ चटै छथि सब

लेखक गण क, ख, लिखि फानथि
अपना कें युग-गुरु कै मानथि
तुक मे तुक काव्यक मर्म बुझि
बुलि बुलि कवि ज्ञान छाँटै छथि सब

युग - चक्र

नेता गण ताने भरथि सतत
हुर - दुङ जनता ने करथि सतत
तैं हेतु आइ युग - पुरुष लोकनि
व्यर्थें दिन - राति खटै छथि सब

पृथ्वी पर बहुतो छथि पिशाच
जनिका लागल छन्हि धधकि आँच
पुरुषार्थ एकता फेर बलें
गौरव सँ सैह फटै छथि सब

युग - चक्र

ओ हितक बात मानथु किऐक ?
ओ शास्त्र - तत्व जानथु किऐक ?
तत्वक जे क्यो छथि जननिहार
रस्ता सँ आइ हटै छथि सब

उपकारी गीरह ओझराबै
तँ कोना विरोधी सोझराबै ?
बिनु बुझनहिं अपनहिं दाँतक तर
दै आङुर, अपन कटै छथि सब ।

युग - चक्र

भरि बीत जगह अछि देल गेल
अछि लोक ताहि मे रेल पेल
नहिं अँटत सूइ बनि फार मुदा
ततबे मे पैसि अँटै छथि सब

छन्हि लागि रहल सब कें 'संचर'
रस्ते भेलाह बहुतो 'पंचर'
बिनु 'मुत्तेसनहिं' हड़बड़ हड़बड़
बिनु तकनहिं छिद्र सटै छथि सब

—: तेसर फेरा :—

आन्हर छथि भगवान कहो के ?
आजुक युग मे भौतिक वाद क
फूसि फटक अभिमान कहो के ?

पाथर मे ओ बास करइ छथि
आ हमरे उपहास करइ छथि
हमरे सँ पुजबइ छथि आ'
हमरे लग 'शेखी शान' कहो के !

युग - चक्र

पेटक अछि लागल लपेट जा'
मुँह पर अछि लागल चपेट ता'
ककर माय ओ बाप, ककर वा
होइत छइ सन्तान कहौ के ?

सुन्दरता लै पुरुष फटइ छथि
नारी वर्ग क नाक कटइ छथि
तैं तँ महिला सब उठि चलली
काटै पुरुषक कान कहौ के ?

ओ भिड़ती आ लड़ती जा' कै
सभा - मंचपर अड़ती जा' कै
पुरुष समाज क बीच झाड़ती
बड़का टा व्याख्यान कहो के !

पुरुषक हेतु अनारी नारी
पुरुषे नारिक हेतु अनारी
फूसि घोंघाउजि मे दनू दल
होइ' छथि व्यर्थं हरान कहो के !

युग - चक्र

प्रकृति पुरुष दूनू समान अछि
ने ई न्यून, न ओ महान अछि
युग - चक्रक चक्कर पर नाचल
निश्चित अनुसन्धान कहौ के ?

सभक उखाही सब करैत अछि
अपने टा लै जग मरैत अछि
आनक लेखें आन बनल अछि
आलू सड़ल पुरान कहौ के ?

अपना लग संसार ढीठ अछि
आँखि क लेखें पाछु पीठ अछि
सभक जनइ छइ सब तेओ
अनका लै सब 'वैमान' कहौ के ?

एकर विवेचन के करैत अछि
जे 'करैत' अछि, से करैत अछि
हमरो सन बुड़िबान बुझैऐ'
अपना कें विद्वान कहौ के !

युग - चक्र

सब अलच्छ अवतार लेलक अछि
रुच्छ छुच्छ संसार देलक अछि
अपन वेगतें युग अछि आन्हर
परतच्छक परमान कहाँ के ?



—: चारिम फेरा :—

कहबइ ककरा, के अछि मुँहगर !
बहुत दिन सँ जग बन्हैत अछि
वर्तमान युग से सोन्हैल अछि
ढोंग दाग कें सब तकैत अछि
अपने जोगरक अपने गर गर
कहबइ ककरा के अछि मुँहगर ?

स्वर्ग-भूमि ई नरक भेल अछि
नरम जते' छल तड़क भेल अछि
तड़क बनल अछि आजुक युगमे
गिलगर, ढिलगर हलगर सोगर
कहबइ ककरा के अछि मुँहगर ?

युग - चक्र

नेढ़ा पर जा' बैसल मच्छड़
लगने लस्सा काटै कच्छड़
'को' क कथा की ? कात पड़ल छइ
आँखिक सोझाँ कमरी कटहर
कहबइ ककरा के अछि मुँहगर ?

मन मे सदिखन होइछ शंका
राम राज्य मे बनै न लंका-
कपि छथि बहुतो किन्तु कपीशक
बिनु के डाहत नगर भयंकर
कहबइ ककरा, के अछि मुँहगर ?

जौं जौं गोरहा फोलि रहल छइ
तँऽ तँऽ मनुआँ डोलि रहल छइ
ढोढ़क सुनि फुफकार निरन्तर
कापि रहल मतिहुक मत थर-थर
कहबइ ककरा, के अछि मुँहगर ?

ककरा आब उठइ छइ चाटी
सबहक बदलल छइ परिपाटी
झाड़, फूक, वैदक पुड़िआ की
सुइया चाही नोंकगर चोखगर
कहवइ ककरा, के अछि मुँहगर !

युग - चक्र

शास्त्र-पुरान पुरान पड़ल अछि
एकवारे पर प्रान गड़ल अछि
व्यासक गद्दी लग जा' जैता
सुनता तावत 'लेक्चर' चोटगर
कहबइ ककरा, के अछि मुँहगर ?

लटल बुड़ल बनि गेल'छि हाथी
बसुली फूकि रहल अछि भाथी
कइची बसुलिक क रूप धरइ अछि
महा विलच्छन सोरगर पोरगर
कहबइ ककरा, के अछि मुँहगर ?

शाक्त लोकनि सन्हिएेल फिरइ छथि
वैष्णव सब मन्हुऐल फिरइ छथि
पण्डित लोकनि तकइ छथि सहजहिं
सुरसुर, मुरमुर, नोनगर, तेलगर
कहबइ ककरा के अछि मुँहगर ?

जग चलैछ कबुला पाती - पर
राखि हाथ अपने छाती पर
बाजै युग, युगचक्र क चक्कर
अँटकत नहिं, ई चलत निरन्तर
कहबइ ककरा, के अछि मुँहगर !

—: पाँचम फेरा :—

हमर कथा क्यौ कान दैत अछि !
जे खोपड़ी छरवा न सकइ छल
से सव आइ मकान दैत अछि,

लुरिगर सब भरि मोन उठौलक
किछु खैलक, किछु भार पठौलक
जे मकैक नेढ़ा तकैत छल
से सब ऊँच मचान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि

जकर सुखैल छलैक'छि भोंटी
जे तकैत छल गूड़ा - रोटी
सेहो सब अपना कूकुर केँ
जलखइ मे पकमान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

जे भगवान क नाम न लइ छल
जे भगवा लै दाम न दइ छल
से मुर्दा लै कफन दान—
मलमल सँ थानक थान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

युग - चक्र

पदलोलुप सब लोक भेल अछि
निस्सन जे छल फोंक भेल अछि
त्यागक मन्त्र सिखाबै अनका
आ' अपने मुसकान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

धर्म - कर्म पर रोक भेल अछि
नीक लोक सभ जोंक भेल अछि
भीतर सोनित चूसि रहल अछि
ऊपर ऊपर प्रान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

युग - चक्र

छलइ ने जकरा घ'र घड़ारी
से बनि गेल'छि आइ भँड़ारी
जे परती तकने फिरैत छल
से अनका खरिहान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

ज्ञानक पोथी पढ़ि पढ़ि बिसरल
समय पाबि आगाँ दिश ससरल
अनकर घेँट ततारै लै से
सब छूरी पर 'सान' दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

युग - चक्र

सोझ लोह चुट्टा वनि गेल'छि
श्रौर हैत, एखने की भेल'छि
जीबी तँऽ की की ने देखी
युग - चक्रे परमान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

अन्न बिना संसार विकल अछि
अपने कर्मक सब प्रतिफल अछि
गुरू गूड़, चेला बनि चिन्नी
सब गिदरा गुड़कान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?

युग - चक्र

बिष्ठी लै दँत - खिष्ठी जकरा
जोड़ा बड़द द्वारि पर तकरा
घर क निकलुआ राजनीति-
सागर मे सब बुड़कान दैत अछि
हमर कथा क्यौ कान दैत अछि ?



Scanned by CamScanner

—: छठम फेरा :—

भरि जन्म कमैला बड़द मुदा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

कत दुर्योधन भेल एकट्ठा
भीमसेन सन बहुतो पट्ठा
दुःशासन सन आसन छेकल
बड़ बड़ पैघ अलग टेटा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

युग - चक्र

एको युधिष्ठिर मेटि न सकला
कर्म रेख क्यौ मेटि न सकला
लेटि गेल छ्थ सब छाहरि तर
भरि पेटा ओ अध - पेटा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

पार्थ पुनः अवतार लेलन्हि अछि
छार भार कप्पार लेलन्हि अछि
हिसक्व कहाँ लगलन्हि अछि ककरो
नहि लगलन्हि अछि हुरपेटा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

युग - चक्र

लञ्छन एक कुलञ्छन बेसी
भुली बिलाड़ि थिकी अनदेशी
भिनसर साँझ उठौना चाही
छुल्हिगर दूध अवस्से टा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

एकसर पार्थ कोना संचरता
वन वन जा' फल मूल कचरता
लै प्रकाश दौड़ल अबैत अछि
भगयोगनी दल अगबे टा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

युग - चक्र

हथ हथ भरि जे जीह बबै छथि
सब सँ बेसी सैह पबै छथि
क्यौ भगिना क्यौ भगिनमान,
क्यौ साढ़ू आ' क्यौ सरबेटा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

युग धो धा कै लाजो चटलक
अपन पाप अनका सिर सटलक
कटलक टीक, पटकलक संस्कृति
शेषो छल बस एतबे टा
बैसल हँकमइ छथि कुकुरे टा

-: सातम फेरा :-

चक्कक गति निर्माणक युग मे
उनटे तेरह चास करइ छथि

अपन प्रशंसा अपने मुँह सँ
द्वारि द्वारि पर कैने घूरथि
जकर जेहन छइ चालि तकर
संग ढुकदुम ढुकढुम तहिना पूरथि

बैसल बगुली केर टका केँ
पाँचक आइ पचास करइ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि

जे जेम्हरे पौलन्हि सन्हिएैला
जे जेम्हरे चुकला, भुतिएैला
छल सुतिएैल सैह अछि कोंढ़गर
भोंटगर सब सहजहिं सुतिएैला

बहुतो मे उल्लास भरल आ'
बहुतो दीर्घ निसास भरइ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि

बुझनिक सब धोकड़ी बनबौलन्हि
किछु पुजने सब ठाम पुजौलन्हि
जे जेम्हरे पौलन्हि से धैलन्हि,
किछु खैलन्हि, किछु काँख दबौलन्हि

युग धैलक अछि तेहन चालि
ब्रह्मा झा सेहो फाँस पड़इ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि

युग - चक्र

ढोलकी पर की की ने बाजत ?
बुढ़बा सब की की ने साजत ?
जतै भयंकर दाग पड़ल अछि
ततै ततै अँकरी दै माँजत

हमरा सब छुछुऐल फिरइ छी
ओ सब भोग विलास करइ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि

युग - चक्र

आके धुथुर खाथु ने बैसल
तनिको पेट दरिद्रा पैसल
महादेव छथि बज्र बूढ़
जग जनिका अढरन-ढरन बुझइछल

घोंटिघाँटि तनिको लै राखू
अच्छत फूल निंघास करइ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि

राकस जकाँ करइ छथि भुक भुक
तैँ करैत अछि जी मे धुक धुक
अस्ताचल धरि पहुँचि कतेको
आब करइ छथि लुकभुक लुकभुक

हँफने छथि सरिआ कै जें
से हो की घोड़ी घास करइ छथि
उनटे तेरह चास करइ छथि

—: आठम फेरा :—

जरि गेल जौड़ जरि जाओ मुदा
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

मानव नहिं बनि सकले मानव
कतबो कहब कदापि न मानब
जनले जे अछि बात ताहि लै
कतबो कूदब, कतबो फानव,

औषधि वाड़ी करू मुदा
भीतर अँतरी धरि सड़ले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

सब क्यौ अगिला अपन बनाबै
सबतरि आसन अपन जमाबै
पाथर सन जे अछि कठोर
तकरा रौदक धाही न धमाबै

जे गड़ि गेल पाँकमे पहिने
से एखनहुँ धरि गड़ले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

युग - चक्र

रोपल गेल विषक जे लत्ती
से मुरछल नहिं एक्को रत्ती
बैसत ऊँट कोन गर धै से
जानथि आब स्वयं भगवत्ती

जे गौरव सँ अकड़ि चलइ छल
सहजहिं आब अकड़ले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

युग - चक्र

पजरल छल कनिजें टा चिनगी
जे लेलक संसारक जिनगी
जड़ि मे पुन: धुँआइत अछि से
निश्चय पहुँचत जा कै फुनगी

जे बुझैत छी अछि मिझैल,
से भ्रम थिक आब पजरले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

सब छथि अपने मूँह फुलौने
हैत आब की घाड़ झुलौने
जनिके छलहुँ मिलौने सब मिलि
सैह लोकनि छथि आइ हुलौने

बुन्दे - बुन्दे भरल घैल जे
पापक आब अफड़ले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

बहुतो गूड़ चाउर चिबबै छथि
पाकल बाँस कतें लिबबै छथि
छथि संसारक कतें अभागल
बैसल- केबल मूँह बबै छथि

किछु जन झिल्ली झाड़ि रहल छथि
किछु बुझैत छथि झड़ले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

—: नवम फेरा :—

बगुला बैसक बिनु गेने
जीवन कें सफल कोना कहतइ ?
ककरो क्यौ सफल कोना कहतइ ?

इच्छा हो यदि जीबैत रही
कैंचो भरि मधु पीबैत रही
फटलो पुरान खद्धड़क प्योन
पर प्योन ताकि सीबैत रही

टोपक बहु टोपी बिनु नेने
गर्दनि कें फँसल कोना कहतइ ?
ककरो क्यौ सफल कोना कहतइ ?

युग - चक्र

घूमू किछु दिन अपनहुँ जा कै
सत्ता - धारी क महल्ला मे
देखब ढाबुस कोंकिआय रहल
ढोंढ़क मृदु अति लघु कल्ला मे

उचडब अलगट्टे बिनु सिखने
छोआ मधुधार कोना बहतइ ?
ककरो क्यौ सफल कोना कहतइ ?

युग - चक्र

मुखड़ा फूटल ढोल मुदा
बाजू मिसरी सन बोल अहाँ
पिछड़ैत रहै यदि पैर पाछु
मानू दुनिआ कैं गोल अहाँ

घड़सूड़क मैल विना छुटने
क्यौ 'ऐश' क भार कोना सहतइ ?
ककरो क्यौ सफल कोना कहतइ?

युग - चक्र

चारू कछेर समगर्दे छइ
इचना, पोठी से छइ अपार
ककरा बखरा मे की पड़तइ
नहिं सभक एकरङ छइ कपार

कबुला - पाती किछु विनु कैने
गैंची क सुतार कोना लहतइ ?
ककरो क्यौ सफल कोना कहतइ ?

युग - चक्र

साधना निरत इष्टक ऊपर
युगयुग सँ ध्यान लगौने जे
ई धवल - वसन - बगुलाक पंक्ति
आशा लै अलख जगौने जे

डिहवारक खूर विना पुजने
पीड़ाक पहाड़ कोना ढहतइ !
ककरो क्यौ सफलकोना कहतइ ?

युग - चक्र

ककरो उपवन छइ मँजरि रहल
अनके रक्तें सब दिन सीचल
ककरो अन्तर छइ पजरि रहल
भूखल शिशु दिस मन छइ खीचल

बाजह नवयुगक विधाता गरा !
जग जा कै ककर चरण गहतइ !
जीवन कें सफल कोना कहतइ?

लेखकक प्रकाशित पुस्तक

१ गुदगुदी— ।)=

२ त्रिफला— ।=

३ वीर कन्या— ॥.०

नवरत्न गोष्ठीक प्रकाशन

१ कृषक ('माथुर') १)

२ वनकुसुम (राघवाचार्य्य) १)

३ मधुकण " ॥।)

४ कला (चतुरानन) १)

५ विकाश " १)

मुद्रक— मिथिला - प्रेस, दरभंगा